रात्रिक्लास 29/6/68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

कोई समय आवेगा जो फुल साइज़ **9x6** या **6x4** चित्र सभी अच्छी तरह लगे हुए होंगे। अभी तो मकान किराया पर लेना पड़ता है आगे चलकर गवर्मेन्ट आपे ही बड़े2 माकन देंगे। कालेज यह भी बन जावेंगे; क्योंकि मुख्य है चरित्र। आसुरी चरित्र और दैवी चरित्र। बच्चे समझते हैं सच्च2 हम आसुरी गुण वाले थे। अभी जानते हैं दैवी राज्य स्थापन हो रही हैं। आसुरी गुणों और दैवी गुणों का बेहद का नाटक बना हुआ हैं। बाप बहुत सहज बताते हैं। बाप की पहचान भी नहीं है। सृष्टि चक्र अर्थात् रचना की भी पहचान नहीं है। शिवबाबा बैठ बच्चों को बेहद की हिस्ट्री–जागराफी बताते हैं। जिस्मानी हिस्ट्री जागराफी तो बच्चों को पढ़ी हुई है। बाप वह नहीं समझाते हैं। वह तो सभी जानते हैं। यह रथ भी जानते हैं। यह है नई बात। जो कोई नहीं 45समझाते हैं। तुम आधा कल्प पढ़ते आये हो। सतोगुणी हिस्ट्री जागराफी बाप ही बताते हैं। बच्चे जानते हैं बरोबर हम दैवी सम्प्रदाय के थे। फिर आसुरी सम्प्रदाय के हम बने हैं। हम सो ब्राह्मण ही फिर देवता बनेंगे। फिर क्षत्री ..... फिर ब्राह्मण बनेंगे। बाबा देवता बनावेंगे। यह चक्र याद करते रहने से तुम्हारे विकर्म विनाश होते रहेंगे; परन्तु यह याद ही माया भुलाती है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अभूल बनते जावेंगे। वैसे भविष्य पद पावेंगे। बाप को ही याद करना है। बाप का बनने से ही वरसा पावेंगे। हर 5000 वर्ष बाद रावण पतित बनाती है। फिर बाप आकर पावन बनाते हैं। इसको रावण राज्य, उसको रामराज्य कहा जाता है। रामराज्य अर्थात् ईश्वरीय राज्य। कहाँ भी बच्चे मुंझते हो तो बाप से पूछ सकते हो। तुम पूज्य थे फिर पुजारी फिर पूज्य। सतोप्रधान बाबा कैसे बनेंगे? बाप कहते हैं मामेकं याद करते2 अन्त मते सो गति हो जावेगी। अपन को आत्मा समझ बाप को बाप से वरसा लेना है। पहले हम आत्मा हैं। बाप समझाते हैं हम आत्मा हैं यह हमारा शरीर है। शरीर बड़ा होता है तो आत्मा को ज्ञान है। अभी यह छोड़ दूसरा नया लेना है। यहाँ वह ज्ञान नहीं है। यह है श्रीमत। देवता बनने की श्रीमत मिलती है। ऊँच ते ऊँच भगवान है ना। कल्प2 तुमको यह बातें बाप समझाते हैं। यह तो समझते हो देवताएँ किसके माला हैं? प्रजापिता ब्रह्मा के। वह रूद्र माला सारी दुनिया की है। फिर हरेक धर्म की अलग माला। देवी–देवताओं की अलग माला। उनका बड़ा प्रजापिता ब्रह्मा। इस्लामी का इब्राहीम। बौद्धियों का बुद्ध। आदी सनातन देवी–देवता धर्म किसने रचा? कोई है नहीं। अपने धर्म को भूल धर्मभ्रष्ट, कर्मभ्रष्ट हो गये हैं। भ्रष्ट ते भ्रष्ट बन पड़े हैं; इसलिए अपन को हिन्दू कह देते हैं। वायसलेस वर्ल्ड में था एक धर्म। विषस(विशियस) वर्ल्ड में अनेकानेक धर्म। धर्म वृद्धि को पाते2 कि(त)ने धर्म हो गये हैं। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश। यह तो सहज है ना। ब्रह्मा द्वारा एक धर्म की स्थापना शंकर द्वारा अनेक धर्मों का विनाश। दिन–प्रतिदिन नाम बाला होता जावेंगा। पहले गरीब फिर नाम जब होगा तो साहुकार आवेंगे फिर जब बहुत शाहुकार आ जावेंगे फिर सन्यास। सभी के मुख से निकलेगा यह तो वन्डरफुल लीला है। इनके आदि–मध्य–अन्त को ई भी नहीं जानते। बाप बच्चों को पहचान दी है। अच्छा बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।